

स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती

प्रारंभिक परीक्षा के लिये:

[महर्षिदयानंद सरस्वती जयंती, आर्य समाज](#)

मुख्य परीक्षा के लिये :

महर्षिदयानंद सरस्वती और उनका योगदान, महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व, आर्य समाज के मार्गदर्शक सिद्धांत ।

[स्रोत: पी.आई.बी](#)

प्रधानमंत्री ने 12 फरवरी 2025 को स्वामी दयानंद सरस्वती (1824-1883) की 201 वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। वे एक महान विचारक, प्रखर राष्ट्रवादी और आर्य समाज के संस्थापक थे।

महर्षिदयानंद सरस्वती कौन थे?

■ परिचय:

- महर्षिदयानंद सरस्वती, 19 वीं सदी के एक प्रमुख समाज सुधारक, दार्शनिक और धार्मिक नेता थे।

■ जन्म एवं प्रारंभिक जीवन:

- उनका जन्म 12 फरवरी, 1824 को गुजरात के टंकारा में एक पारंपरिक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनका नाम मूल शंकर तिवारी था। उनके माता-पिता यशोदाबाई और लालजी तिवारी समर्पित हिंदू थे।
- छोटी उम्र में ही उनमें आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति गहरी रुचि विकसित हो गई और उन्होंने मूर्तिपूजा, अनुष्ठानों और अंधविश्वासों पर प्रश्न उठाए।
- 19 वर्ष की उम्र में सांसारिक जीवन त्यागकर, वे सत्य की खोज में लगभग 15 वर्षों (1845-1860) तक एक तपस्वी के रूप में भ्रमण करते रहे।
- उन्होंने मथुरा में स्वामी वरिजानंद से शिक्षा प्राप्त की, जिन्होंने उन्हें हिंदू धर्म से भ्रष्ट प्रथाओं को समाप्त करने तथा वेदों के सच्चे अर्थ को पुनर्स्थापित करने के लिये काम करने का आग्रह किया।

■ दर्शन और सामाजिक सुधार:

- उन्होंने मूर्तिपूजा, असंप्रत्ययता, जाति-आधारित भेदभाव, बहुविवाह और लैंगिक असमानता का विरोध किया।
- वह एक वर्गव्यतीत और जातिव्यतीत समाज में विश्वास करते थे जहाँ जातिजन्म के बजाय योग्यता पर आधारित होती थी।
- उन्होंने महिला शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, दलित वर्गों के उत्थान, पुनः धर्म परिवर्तन के लिये शुद्ध आंदोलन तथा सती प्रथा और बाल विवाह उन्मूलन की प्रयत्नशक्ति का प्रयोग किया।
- उन्होंने "वेदों की ओर लौटो" पर जोर देते हुए तर्क दिया कि सच्चा हिंदू धर्म वेदों में निहित है, जो तर्कसंगतता, समानता और सामाजिक न्याय को कायम रखते हैं।
- उनके विचार उनकी मौलिक कृति *दिव्य प्रमाण* में संकलित हैं, जिसमें उन्होंने भ्रूण हत्या और दहेज जैसी सामाजिक बुराइयों की आलोचना की तथा वैदिक ज्ञान की वकालत की।

■ शैक्षिक योगदान:

- उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली का विरोध करते हुए आधुनिक, वैज्ञानिक तथा वैदिक शिक्षा की वकालत की।
- वर्ष 1886 में उन्होंने गुरुकुलों, बालिका गुरुकुलों और दयानंद एंग्लो-वैदिक (DAV) स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना को प्रेरित किया, जिसमें महात्मा हंसराज के नेतृत्व में लाहौर में पहला DAV स्कूल स्थापित किया गया।

■ राष्ट्रवादी आंदोलन में भूमिका:

- वह वर्ष 1876 में "स्वराज" का आह्वान करने वाले पहले व्यक्ति थे, जिसका प्रभाव बाद के नेताओं जैसे बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और महात्मा गांधी पर पड़ा।
- उन्होंने स्वदेशी (आर्थिक आत्मनिर्भरता) अपनाने एवं गौरवशाली के साथ हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में बढ़ावा दिया।

■ वरिष्ठतः

- स्वामी दयानंद सरस्वती को सामाजिक-धार्मिक सुधार के प्रयासों के कारण समाज के रूढ़िवादी वर्गों से प्रतिरोध का सामना करना

पड़ा। हालाँकि, उन्होंने आर्य समाज और DAV स्कूलों जैसी संस्थाओं के माध्यम से एक स्थायी वरिसत छोड़ी, जिसका समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

आर्य समाज क्या है?

■ परिचय:

- आर्य समाज (कुलीनों का समाज) एक हिंदू सुधार आंदोलन है जिसके तहत वेदों को ज्ञान एवं सत्य के अंतिम स्रोत के रूप में बढ़ावा दिया गया।
- इसकी स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने वर्ष 1875 में की थी।

■ मूल मान्यता और सिद्धांत:

- वेदों की प्रधानता पर जोर दिया गया है तथा मूर्त पूजा, पुरोहिती अनुष्ठान, पशु बलि, सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों को अस्वीकार किया गया।
- कर्म (कर्मों का नियम), संसार (पुनर्जन्म का चक्र) और गाय की पवित्रता पर बल दिया गया।
- वैदिक अग्नि अनुष्ठान (हवन/यज्ञ) और संस्कारों को बढ़ावा दिया गया।

■ सामाजिक सुधार और योगदान:

- महिला शिक्षा, अंतरजातीय विवाह और विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया।
- स्कूल, अनाथालय और विधवा आश्रम स्थापित किये गये।
- अकाल राहत और चिकित्सा सहायता में महत्वपूर्ण भूमिका।
- अन्य धर्मों को अपनाने वाले लोगों को पुनः धर्मांतरित करने के लिये शुद्ध आंदोलन का नेतृत्व किया।

प्रश्न. 19वीं शताब्दी के प्रमुख सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन कौन-से थे?

पढ़ें: सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन: भाग I

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वरित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. निम्नलिखित में से कौन-सी घटना सबसे पहले हुई? (2018)

- (a) स्वामी दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना की।
- (b) दीनबंधु मतिर ने नीलदर्पण का लेखन किया।
- (c) बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने आनंदमठ का लेखन किया।
- (d) सत्येंद्रनाथ टैगोर इंडियन सविलि सर्विस परीक्षा में सफलता पाने वाले प्रथम भारतीय बने।

उत्तर: (b)